रम्या रम्या मारा मारा वाला वाला, पाछी पाछी रामत कोय न रही।
हवे ने हवे आधार, आयत पूरण थई।। ५ ।।
सम सम दऊं दऊं स्याम स्याम सुणो सुणो, मम मम भीडो एणी भांत जी।
बोली बोली न न सकूं बलिया रे बलिया, पूरी पूरी मारी खांत जी।। ६ ।।
दई दई सम सम थाकी थाकी तमने, कां कां करो भीडा भीड जी।
आयत आयत आवे रे अंगो अंगें, त्यारे न देखो पीड जी।। ७ ।।
मन मन मनोरथ पूरया पूरया वाला वाला, वली वली लागूं पाय जी।
केही केही पेरे पेरे कहूं कहूं तमने, स्वांस स्वांस हैडे मुझाय जी।। ८ ।।
कर कर जोडी जोडी कहूं कहूं वाला वाला, वली वली मानज मांगूं जी।
मेलो मेलो मुखथी वात कहूं, नमी नमी चरणे लागूं जी।। ९ ।।
जेवी अमने आयत हुती, तमे तेवा रमाड्यां रंग जी।
साथ सकलमां एम सुख दीधां, इंद्रावती पामी आनंद जी।। १० ।।

।। प्रकरण ।। ४३ ।। चौपाई ।। ८१६ ।।

नोट—प्रकरण ।।४२।। और ।।४३।। श्री राजजी महाराज (पारब्रह्म अक्षरातीत) की स्वलीलाएं अद्वैत हैं, जिनका वर्णन करना या टीका लिखना शक्ति और बुद्धि से बाहर की बात है। अपनी आत्मा को जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमात्मा में विलीन कर परमधाम की लीला का अनुभव करें। जिस लीला को अक्षर ब्रह्म ने मांगा था कि परमधाम के अन्दर की प्रेम लीला, जो अपनी रूहों से धनी करते हैं और जिसे वह आपसे करती हैं, उसे दिखाओ यह वह लीला है। इस संसार की संशय भरी बुद्धि और मन इसके पात्र ही नहीं हो सकते।

राग मलार

सखी सखी प्रते स्याम, वालेजीए देह धरया।
कांई वल्लभसूं आ वार, आनंद अति करया।। १ ।।

वालाजी ने एक-एक सखी के लिए एक-एक तन धारण किया है, जिससे इस बार आनन्द अत्यधिक हो गया।

मारा पूरण मनोरथ जेह, थया वरसूं मली।
कांई रही नहीं लवलेस, वालाजीसूं रंग रली।। २ ।।

वालाजी के मिलने पर हमारी चाहना पूर्ण हो गई है और वालाजी से आनन्द लेने की अब इच्छा शेष नहीं रही।

अमे जेम कह्यूं वाले तेम, कीधी रामत घणी।
हाम हुती हैडा मांहें, वाले टाली अमतणी।। ३ ।।

हमने वालाजी से जैसा कहा, उन्होंने वैसा खेल खिलाया और हमारे हृदय की इच्छाओं को पूर्ण कर दिया।

Nijanand App

एणे समे जे सुख, थया जे साथमा।
कां जाणे वल्लभ, कां जाणे मारी आतमा।। ४ ।।

इस समय में जो सुख सखियों को मिला उसे वालाजी जानते हैं या मेरी आत्मा जानती है।

जेहेना मनमां जेह, उछाह हुता घणां।
सुख दीधां तेहेने तेह, पार नहीं तेहतणां।। ५ ।।

जिसके मन में जितनी उमंग थी, उसी के अनुसार वालाजी ने उसको वैसे ही बेशुमार सुख दिए।

एम रामत कीधी वन मांहें, रमीने आवियां।
ए सुख आ वन मांहें, भला भमाडियां।। ६ ।।

इस तरह से वन में रामतें खेलकर वापस आए (यमुना तट वापस आए)। इस वृन्दावन में अच्छे-अच्छे सुखदायी खेल खिलाए।

कहे इंद्रावती साथ, एणी वातो जेटली।
न केहेवाय कोटमों भाग, मारे अंग एटली।। ७ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे सुन्दरसाथजी! वालाजी की जितनी बातें मेरे अंग में हैं, उनका करोड़वां भाग भी वर्णन नहीं हो सकता है।

।। प्रकरण ।। ४४ ।। चौपाई ।। ८२३ ।।

राग गोडी–झीलणां

अणी हांरे झीलण रंग सोहांमणां रे, आपण झीलसूं वालाजीने साथ।
रामत रमीने सहु आवियां, कांई पूरण थयो रंग रास।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! झीलने का आनन्द बड़ा सुहावना है। हम सब वालाजी के साथ झीलना करेंगे। रास पूरी हो गई है और हम सब रामतें खेल के आए हैं।

श्री राज कहे स्यामाजी सुणो, कांई तमारा मनमां जेह।
साथ सहुने मनोरथ, कांई रह्यो छे एक एह।। २ ।।

श्री राजजी कहते हैं, हे श्यामाजी! सुनो, तुम्हारे मन में तथा समस्त साथ के मन में, यह एक इच्छा बाकी है।

अंगे उमंग उपाइने, भेला नाहिए ते भली भांत।
झीलणां कीजे मन गमतां, खरी पूरूं तमारी खांत।। ३ ।।

अंग में उमंग भरकर हम अच्छी तरह से मिलकर नहाएं। आपके मन की इच्छा के अनुसार आपकी चाहना को झीलना करके मैं पूर्ण करूं।

वेलडिए कुसम प्रेमल, कांई वन झलूवे वाए।
फले रस चढ्या कै भांतना, भोम सोभा वाधंती जाए।। ४ ।।

बेल और फूलों की सुगन्ध से वन हवा में झूम रहे हैं। फल कई तरह के रसों से भरे हैं। इस तरह से इस धरती की शोभा बढ़ती जाती है।

Nijanand App